آيَاتُهَا ١١١ ❀ سُوْرَةُ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْل (١٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

आयात 111	(17) सूरह बनी इस्राईल औलादे याक़ूब (अ)	रुकुआत 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ

मस्जिद	से	रातों रात	अपने बन्दे को	ले गया	वह जो	पाक

الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ

से	ताकि दिखा दें हम उसको	उस के इर्द गिर्द	बरकत दी हम ने	जिस को	मस्जिदे अक़्सा	तक	हराम

اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝١ وَاٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ

किताब	मूसा	और हम ने दी	1	देखने वाला	सुनने वाला	वह	बेशक वह	अपनी निशानियां

وَجَعَلْنٰهُ هُدًی لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِیْ وَكِیْلًا ؕ ۝٢

2	कारसाज़	मेरे सिवा	कि न ठहराओ तुम	बनी इस्राईल के लिए	हिदायत	और हम ने बनाया उसे

ذُرِّیَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝٣

3	शुक्र गुज़ार	बन्दा	था	बेशक वह	नूह (अ) के साथ	हम ने सवार किया	जो - जिस	औलाद

وَقَضَیْنَآ اِلٰی بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ فِی الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِی الْاَرْضِ

ज़मीन	में	अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़रूर	किताब	बनी इस्राईल	तरफ़ - को	साफ़ कह दिया हम ने

مَرَّتَیْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِیْرًا ۝٤ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا

हम ने भेजे	दो में से पहला	वादा	आया	पस जब	4	बड़ा ज़ोर	और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे	दो मरतबा

عَلَیْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ

शहरों के अन्दर	तो वह घुस पड़े	सख़्त	लड़ाई वाले	अपने बन्दे	तुम पर

وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝٥ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَیْهِمْ

उन पर	बारी	तुम्हारे लिए	हम ने फेर दी	फिर	5	पूरा होने वाला	एक वादा	और था

وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِیْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِیْرًا ۝٦

6	जत्था (लशकर)	ज़ियादा	और हम ने तुम्हें कर दिया	और बेटे	मालों से	और हम ने तुम्हें मदद दी

اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۟ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ

तो उन के लिए	तुम ने बुराई की	और अगर	अपनी जानों के लिए	तुम ने भलाई की	तुम ने भलाई की	अगर

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِیَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِیَدْخُلُوا

और वह घुस जाएं	तुम्हारे चेहरे	कि वह बिगाड़ दें	दूसरा वादा	आया	फिर जब

الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِیُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِیْرًا ۝٧

7	पूरी तरह बरबाद	जहां ग़ल्बा पाएं वह	और बरबाद कर डालें	पहली बार	वह घुसे उस में	जैसे	मस्जिद

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

पाक है वह, जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम (ख़ाना कअ्बा से) मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के इर्द गिर्द (अतराफ़) को हम ने बरकत दी है, ताकि हम उसे अपनी निशानियां दिखा दें, बेशक वह सुनने वाला देखने वाला है। (1)

और हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि तुम मेरे सिवा (किसी को) कारसाज़ न ठहराओ। (2)

ऐ (उन लोगों कि) औलाद! जिन को हम ने नूह (अ) के साथ सवार किया, बेशक वह शुक्रगुज़ार बन्दा था। (3)

और हम ने बनी इस्राईल को किताब में साफ़ कह सुनाया, अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़मीन में दो मरतबा और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे (सरकशी करोगे)। (4)

पस जब दोनों में से पहले वादे (का वक़्त) आया तो हम ने तुम पर अपने सख़्त लड़ाई वाले बन्दे भेजे, वह शहरों के अन्दर घुस गए (फैल गए), और यह एक वादा था पूरा हो कर रहने वाला। (5)

फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी फेर दी (तुम्हें ग़ल्बा दिया) और मालों से और बेटों से हम ने तुम्हें मदद दी और हम ने तुम्हें बड़ा जत्था (लशकर) कर दिया। (6)

अगर तुम ने भलाई की तो अपनी जानों के लिए, और अगर तुम ने बुराई की तो उन (अपनी जानों) के लिए, फिर (याद करो) जब दूसरे वादे (का वक़्त) आया कि वह (दुश्मन) तुम्हारे चहरे बिगाड़ दें, और वह मस्जिदे (अक़्सा) में घुस जाएं जैसे वह पहली बार घुसे थे, और यह कि जहां ग़ल्बा पाएं, पूरी तरह बरबाद कर डालें। (7)

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ وقف لازم

जहन्नम	और हम ने बनाया	हम वही करेंगे	तुम फिर (वही) करोगे	और अगर	वह तुम पर रहम करे	कि	तुम्हारा रब	उम्मीद है

لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ

सब से सीधी	वह	उस के लिए जो	रहनुमाई करता है	यह क़ुरआन	बेशक	8	क़ैद ख़ाना	काफ़िरों के लिए

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ﴿٩﴾

9	बड़ा अजर	उन के लिए	कि	अच्छे	अ़मल करते हैं	वह लोग जो	मोमिन (जमा)	और बशारत देता है

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٠﴾ ع ١٠ ١

10	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	और यह कि

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿١١﴾

11	जल्द बाज़	इन्सान	और है	भलाई की	उस की दुआ	बुराई की	इन्सान	और दुआ करता है

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ

दिन की निशानी	और हम ने बनाया	रात की निशानी	फिर हम ने मिटा दिया	दो निशानियां	और दिन	रात	और हम ने बनाया

مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

बरस (जमा)	गिनती	और ताकि तुम मालूम करो	अपने रब से (का)	फ़ज़्ल	ताकि तुम तलाश करो	दिखाने वाली

وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ

उसको लगा दी (लटका दी)	और हर इन्सान	12	तफ़्सील के साथ	हम ने बयान किया है	और हर चीज़	और हिसाब

طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿١٣﴾

13	खुला हुआ	और उसे पाएगा	एक किताब	रोज़े क़ियामत	उस के लिए	और हम निकालेंगे	उसकी गर्दन में	इस की क़िस्मत

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿١٤﴾ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا

तो सिर्फ़	हिदायत पाई	जिस	14	हिसाब लेने वाला	अपने ऊपर	आज	तू ख़ुद	काफ़ी है	अपना किताब (नामा-ए-आमाल)	पढ़ ले

يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ

कोई उठाने वाला	और बोझ नहीं उठाता	अपने ऊपर (अपने बुरे को)	गुमराह हुआ	तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	और जो	अपने लिए	उस ने हिदायत पाई

وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾ وَاِذَآ اَرَدْنَآ

हम ने चाहा	और जब	15	कोई रसूल	हम (न) भेजे	जब तक	अ़ज़ाब देने वाले	और हम नहीं	दूसरे का बोझ

اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا

उन पर	फिर पूरी हो गई	उस में	तो उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस के ख़ुश हाल लोग	हम ने हुक्म भेजा	कोई बस्ती	कि हम हलाक करें

الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	बस्तियां	से	हम ने हलाक कर दीं	और कितनी	16	पूरी तरह हलाक	फिर हम ने उन्हें हलाक किया	बात

نُوْحٍ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿١٧﴾

17	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दे	गुनाहों को	तेरा रब	और काफ़ी	नूह (अ)

उम्मीद है (बईद नहीं) कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम (भी) वही करेंगे और हम ने जहन्नम काफ़िरों के लिए क़ैद ख़ाना बनाया है। (8)
बेशक यह क़ुरआन उस राह की रहनुमाई करता है जो सब से सीधी है। और उन मोमिनों को बशारत देता है जो अच्छे अ़मल करते हैं कि उन के लिए बड़ा अजर है। (9)
और यह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिए तैयार किया है अ़ज़ाब दर्दनाक। (10)
और इन्सान बुराई की दुआ करता है, जैसे वह भलाई की दुआ करता है, और इन्सान जल्द बाज़ है। (11)
और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया, फिर हम ने रात की निशानी को मिटा दिया (मान्द कर दिया) और हम ने दिन की निशानी को दिखाने वाली बनाया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो और हर चीज़ को हम ने उसे तफ़्सील के साथ बयान कर दिया है। (12)
और हम ने हर इन्सान की क़िस्मत उस की गर्दन में लटका दी, और हम उस के लिए निकालेंगे रोज़े क़ियामत एक किताब, वह उसे खुला हुआ पाएगा। (13)
अपना नामा-ए-आमाल पढ़ ले, आज तू ख़ुद अपने ऊपर काफ़ी है हिसाब लेने वाला (मोहतसिब)। (14)
जिस ने हिदायत पाई उस ने सिर्फ़ अपने लिए हिदायत पाई, और जो कोई गुमराह हुआ तो वह गुमराह हुआ सिर्फ़ अपने बुरे को, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, और जब तक हम कोई रसूल न भेजें हम अ़ज़ाब देने वाले नहीं। (15)
और जब हम ने किसी बस्ती को हलाक करना चाहा तो हम ने उस के ख़ुश हाल लोगों को हुक्म भेजा तो उन्हों ने उस में नाफ़रमानी की फिर उन पर पूरी हो गई बात (हुक्म साबित हो गया) फिर हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर दिया। (16)
और हम ने नूह (अ) के बाद कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं और तेरा रब काफ़ी है अपने बन्दो के गुनाहों की ख़बर रखने वाला देखने वाला। (17)

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا

हम ने बना दिया है	फिर	हम चाहें	जिस को	जितना हम चाहें	उस को इस (दुनिया) में	हम जल्दी दे देंगे	जल्दी	चाहता है	जो कोई

لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا

उस के लिए	और कोशिश की उस ने	आख़िरत	चाहे	जो और	18	दूर किया हुआ (धकेला हुआ)	मज़म्मत किया हुआ	वह दाख़िल होगा इस में	जहन्नम	उस के लिए

سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ

इन को भी	हम देते हैं	हर एक	19	क़द्र की हुई (मक़बूल)	उन की कोशिश	है - हुई	पस यही लोग	और (बशर्त यह कि) हो वह मोमिन	उस की सी कोशिश

وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ

किस तरह	देखो	20	रोकी जाने वाली	तेरा रब	बख़्शिश	और नहीं है	तेरा रब	बख़्शिश	से	और उन को भी

فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿٢١﴾

21	फ़ज़ीलत में	और सब से बरतर	सब से बड़े दरजे	और अलबत्ता आख़िरत	बाज़ (दूसरा)	पर	उन के बाज़ (एक)	हम ने फ़ज़ीलत दी

ع ١٢/٢ ٢ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿٢٢﴾ ع وَقَضٰى رَبُّكَ

तेरा रब	और हुक्म फ़रमा दिया	22	बेबस हो कर	मज़म्मत किया हुआ	पस तू बैठ रहेगा	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ	तू न ठहरा

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ

बुढ़ापा	तेरे सामने	अगर वह पहुँच जाएं	हुस्ने सुलूक	और माँ बाप से	उस के सिवा	कि न इबादत करो

اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا

बात	उन दोनों से	और कहो	और न झिड़को उन्हें	उफ़	उन्हें	तो न कह	वह दोनों	या	उन में से एक

كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا

उन दोनों पर रहम फ़रमा	ऐ मेरे रब	और कहो	मेहरबानी	से	आजिज़ी	बाज़ू	उन दोनों के लिए	और झुका दे	23	अदब के साथ

كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ

नेक (जमा)	तुम होगे	अगर	तुम्हारे दिलों में	जो	खूब जानता है	तुम्हारा रब	24	बचपन	उन्हों ने मेरी पर्वरिश की	जैसे

فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ

और मिस्कीन	उस का हक़	क़राबतदार	और दो तुम	25	बख़्शने वाला	रुजूअ करने वालों के लिए	है	तो बेशक वह

وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ

भाई (जमा)	हैं	फ़ुज़ूल ख़र्च (जमा)	बेशक	26	अन्धा धुन्द	और न फ़ुज़ूल ख़र्ची करो	और मुसाफ़िर

الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ

इन्तिज़ार में	उन से	तू मुँह फेर ले	और अगर	27	नाशुक्रा	अपने रब का	शैतान	और है	शैतान (जमा)

رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ

अपना हाथ	और न रख	28	नर्मी की बात	उन से	तो कह	तू उस की उम्मीद रखता है	अपना रब	से	रहमत

مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿٢٩﴾

29	थका हुआ	मलामत ज़दा	फिर तू बैठा रह जाए	पूरी तरह खोलना	और न उसे खोल	अपनी गर्दन	तक - से	बन्धा हुआ

जो कोई जल्दी (दुनिया में) चाहता है, हम उस को जितना चाहे जल्दी (दुनिया में) दे देंगे, फिर हम ने उस के लिए जहन्नम बना दिया है, वह उस में दाख़िल होगा मज़म्मत किया हुआ धकेला हुआ। (18)
और जो कोई आख़िरत चाहे और उस के लिए उस की सी कोशिश करे, बशर्त यह कि वह मोमिन हो, पस यही लोग हैं जिन की कोशिश मक़्बूल हुई। (19)
हम तेरे रब की बख़्शिश से उन को भी और उन को भी हर एक को देते हैं और तेरे रब की बख़्शिश (किसी पर) रोकी जाने वाली नहीं। (20)
देखो! हम ने किस तरह उन के एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और अलबत्ता आख़िरत के दरजे सब से बड़े, और फ़ज़ीलत में सब से बरतर हैं। (21)
अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न ठहरा पस तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया हुआ, बेबस हो कर। (22)
और तेरे रब ने हुक्म फ़रमा दिया कि उस के सिवा किसी और की इबादत न करो, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करो, और उन में से एक या वह दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन्हें न कहो उफ़ (भी) और उन्हें न झिड़को, और उन दोनों से अदब के साथ बात कहो (करो)। (23)
और उन के लिए आजिज़ी के (साथ) बाज़ू झुका दो मेहरबानी से, और कहो ऐ मेरे रब! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे उन्हों ने बचपन में मेरी पर्वरिश की। (24)
तुम्हारा रब खूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम नेक होगे तो बेशक वह रुजूअ करने वालों को बख़्शने वाला है। (25)
और दो तुम क़राबतदार को उस का हक़, और मिस्कीन और मुसाफ़िर को, और अन्धा धुन्द फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो। (26)
बेशक फ़ुज़ूल ख़र्च शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है। (27)
और अगर तू अपने रब की रहमत (फ़राख़ दस्ती) के इन्तिज़ार में, जिस की तू उम्मीद रखता है, उन से मुँह फेर ले तो उन से तू कह दिया कर नर्मी की बात। (28)
और अपना हाथ अपनी गर्दन तक बन्धा हुआ न रख (कन्जूस न हो जा) और न उसे खोल पूरी तरह (बिलकुल ही) कि फिर तू मलामत ज़दा थका हारा बैठा रह जाए। (29)

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ

अपने बन्दों से	है	बेशक वह	और तंग कर देता है	जिस की वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ कर देता है	तेरा रब	बेशक

خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝ۧ ٣٠ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ ٣ ع ٨ ٣

हम रिज़्क़ देते हैं उन्हें	हम	मुफ़लिसी	डर	अपनी औलाद	और न क़त्ल करो	30	देखने वाला	ख़बर रखने वाला

وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ۝ ٣١ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ

है	बेशक यह	ज़िना	और न क़रीब जाओ	31	गुनाह बड़ा	है	उन का क़त्ल	बेशक	और तुम को

فَاحِشَةً ۭ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝ ٣٢ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا

मगर	अल्लाह ने हराम किया	वह जो कि	जान	और न क़त्ल करो	32	रास्ता	और बुरा	बेहयाई

بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ

पस वह हद से न बढ़े	एक इख़्तियार	इस के वारिस के लिए	तो तहक़ीक़ हम ने कर दिया	मज़लूम	मारा गया	और जो	हक़ के साथ

فِّى الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝ ٣٣ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ

इस तरीक़े से	मगर	यतीम का माल	और पास न जाओ	33	मदद दिया गया	है	बेशक वह	क़त्ल में

هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ

है	अहद	बेशक	अहद को	और पूरा करो	अपनी जवानी	वह पहुँच जाए	यहां तक कि	सब से बेहतर	वह

مَسْئُوْلًا ۝ ٣٤ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ

सीधी	तराज़ू के साथ	और वज़न करो	जब तुम माप कर दो	पैमाना	और पूरा करो	34	पुर्सिश किया जाने वाला

ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ ٣٥ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ

बेशक	इल्म	उस का	तेरे लिए- तुझे	जिस का नहीं	और पीछे न पड़ तू	35	अन्जाम के ऐतिबार से	और सब से अच्छा	बेहतर	यह

السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝ ٣٦

36	पुर्सिश किया जाने वाला	इस से	है	यह	हर एक	और दिल	और आँख	कान

وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ

पहाड़	और हरगिज़ न पहुँचेगा	ज़मीन	हरगिज़ न चीर डालेगा	बेशक तू	अकड़ कर (इतराता हुआ)	ज़मीन में	और न चल

طُوْلًا ۝ ٣٧ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ۝ ٣٨ ذٰلِكَ مِمَّآ

उस से जो	यह	38	नापसन्दीदा	तेरा रब	नज़्दीक	उस की बुराई	है	यह	तमाम	37	बुलन्दी

اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ

कोई और	माबूद	अल्लाह के साथ	बना	और न	हिक्मत से	तेरा रब	तेरी तरफ़	वहि की

فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝ ٣٩ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ

बेटों के लिए	तुम्हारा रब	क्या तुम्हें चुन लिया	39	धकेला हुआ	मलामत ज़दा	जहन्नम में	फिर तू डाल दिया जाए

وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝ۧ ٤٠ ٤ ع ١٠ ٤

40	बड़ा बोल	अलबत्ता कहते हो (बोलते हो)	बेशक तुम	बेटियां	फ़रिश्ते	से - को	और बना लिया

बेशक तेरा रब जिस का वह चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिस का चाहता है) तंग कर देता है, बेशक वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (30)
और तुम अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न करो, हम ही उन्हें रिज़्क़ देते हैं और तुम को (भी), बेशक उन का क़त्ल बड़ा गुनाह है। (31)
और ज़िना के क़रीब न जाओ, बेशक यह बेहयाई है और बुरा रास्ता। (32)
और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है मगर हक़ के साथ, और जो मज़लूम मारा गया तो तहक़ीक़ हम ने उस के वारिस के लिए एक इख़्तियार (क़िसास) दिया है, पस हद से न बढ़े क़त्ल में, बेशक वह मदद दिया गया है। (33)
और यतीम के माल के पास न जाओ (तसर्रुफ़) न करो) मगर इस तरीक़े से जो सब से बेहतर हो, यहां तक कि वह (यतीम) अपनी जवानी को पहुँच जाए। और अ़हद को पूरा करो, बेशक अ़हद है पुर्सिश किया जाने वाला (ज़रूर पुर्सिश होगी)। (34)
और जब तुम माप कर दो तो पैमाना पूरा करो, और वज़न करो सीधी तराज़ू के साथ, यह बेहतर है और सब से अच्छा है अन्जाम के ऐतिबार से। (35)
और उस के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं, बेशक कान, और आँख, और दिल, उन में से हर एक पुर्सिश किया जाने वाला है (हर एक की पुर्सिश होगी)। (36)
और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, बेशक तू ज़मीन को हरगिज़ न चीर डालेगा, और न पहाड़ की बुलन्दी को पहुँचेगा। (37)
यह तमाम बुराइयां तेरे रब के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं। (38)
यह हिक्मत की (उन बातों) में से है जो तेरे रब ने तेरी तरफ़ वहि की है, और न बना अल्लाह के साथ कोई और माबूद कि फिर तु जहन्नम में डाल दिया जाए मलामत ज़दा, धकेला हुआ (रान्दा-ए-दरगाह)। (39)
क्या तुम्हें चुन लिया तुम्हारे रब ने बेटों के लिए? और अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियां बना लिया, बेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो। (40)

وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا فِىۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لِيَذَّكَّرُوۡا ؕ وَمَا يَزِيۡدُهُمۡ اِلَّا نُفُوۡرًا ﴿۴۱﴾ قُلۡ

कह दें आप (स)	41	नफ़्रत	मगर	बढ़ती उन को	और नहीं	ताकि वह नसीहत पकड़ें	इस क़ुरआन	में	और अलबत्ता हम ने तरह तरह से बयान किया

لَوۡ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوۡلُوۡنَ اِذًا لَّابۡتَغَوۡا اِلٰى ذِى الۡعَرۡشِ سَبِيۡلًا ﴿۴۲﴾

42	कोई रास्ता	अर्श वाले	तरफ़	वह ज़रूर ढून्डते	उस सूरत में	वह कहते हैं	जैसे	और माबूद	उस के साथ	अगर होते

سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوۡلُوۡنَ عُلُوًّا كَبِيۡرًا ﴿۴۳﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبۡعُ

सात (7)	आस्मान (जमा)	उस की	पाकीज़गी बयान करते हैं	43	बहुत बड़ा (बेनिहायत)	बरतर	वह कहते हैं	उस से जो	और बरतर	वह पाक है

وَالۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِيۡهِنَّ ؕ وَاِنۡ مِّنۡ شَىۡءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهٖ وَلٰـكِنۡ

और लेकिन	उस की हम्द के साथ	पाकीज़गी बयान करती है	मगर	कोई चीज़	और नहीं	उन में	और जो	और ज़मीन

لَّا تَفۡقَهُوۡنَ تَسۡبِيۡحَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيۡمًا غَفُوۡرًا ﴿۴۴﴾ وَاِذَا قَرَاۡتَ الۡقُرۡاٰنَ

क़ुरआन	तुम पढ़ते हो	और जब	44	बख़्शने वाला	बुर्दबार	है	बेशक वह	उन की तस्बीह	तुम नहीं समझते

جَعَلۡنَا بَيۡنَكَ وَبَيۡنَ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسۡتُوۡرًا ۙ ﴿۴۵﴾

45	छुपा हुआ	एक पर्दा	आख़िरत पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	हम कर देते हैं

وَّجَعَلۡنَا عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ اَكِنَّةً اَنۡ يَّفۡقَهُوۡهُ وَفِىۡۤ اٰذَانِهِمۡ وَقۡرًا ؕ وَاِذَا

और जब	गिरानी	उन के कान	और में	वह न समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल	पर	और हम ने डाल दिए

ذَكَرۡتَ رَبَّكَ فِى الۡقُرۡاٰنِ وَحۡدَهٗ وَلَّوۡا عَلٰٓى اَدۡبَارِهِمۡ نُفُوۡرًا ﴿۴۶﴾ نَحۡنُ

हम	46	नफ़्रत करते हुए	अपनी पीठ (जमा)	पर	वह भागते हैं	यकता	क़ुरआन में	अपना रब	तुम ज़िक्र करते हो

اَعۡلَمُ بِمَا يَسۡتَمِعُوۡنَ بِهٖۤ اِذۡ يَسۡتَمِعُوۡنَ اِلَيۡكَ وَاِذۡ هُمۡ نَجۡوٰٓى اِذۡ يَقُوۡلُ

जब कहते हैं	सरगोशी करते हैं	वह	और जब	तेरी तरफ़	जब वह कान लगाते हैं	उस को	वह सुनते हैं	जिस ग़र्ज़ से	ख़ूब जानते हैं

الظّٰلِمُوۡنَ اِنۡ تَتَّبِعُوۡنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسۡحُوۡرًا ﴿۴۷﴾ اُنۡظُرۡ كَيۡفَ ضَرَبُوۡا

कैसी उन्हों ने चस्पां कीं	तुम देखो	47	सिहरज़दा	एक आदमी	मगर	तुम पैरवी करते	नहीं	ज़ालिम (जमा)

لَكَ الۡاَمۡثَالَ فَضَلُّوۡا فَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ سَبِيۡلًا ﴿۴۸﴾ وَقَالُوۡۤا ءَاِذَا كُنَّا الربع

हम हो गए	क्या - जब	और वह कहते हैं	48	(सीधी) राह	पस वह इस्तिताअ़त नहीं पाते	सो वह गुमराह हो गए	मिसालें	तुम्हारे लिए

عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ خَلۡقًا جَدِيۡدًا ﴿۴۹﴾ قُلۡ كُوۡنُوۡا حِجَارَةً

पत्थर	तुम हो जाओ	कह दें	49	नई	पैदाइश	फिर जी उठेंगे	क्या हम यक़ीनन	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां

اَوۡ حَدِيۡدًا ۙ ﴿۵۰﴾ اَوۡ خَلۡقًا مِّمَّا يَكۡبُرُ فِىۡ صُدُوۡرِكُمۡ ۚ فَسَيَقُوۡلُوۡنَ مَنۡ

कौन	फिर अब कहेंगे	तुम्हारे सीने (ख़याल)	में	बड़ी हो	उस से जो	और मख़्लूक़	या	50	लोहा	या

يُّعِيۡدُنَا ؕ قُلِ الَّذِىۡ فَطَرَكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنۡغِضُوۡنَ اِلَيۡكَ

तुम्हारी तरफ़	तो वह हिलाएंगे (मटकाएंगे)	बार	पहली	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	फ़रमा दें	हमे लौटाएगा

رُءُوۡسَهُمۡ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلۡ عَسٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنَ قَرِيۡبًا ﴿۵۱﴾

51	क़रीब	वह हो	कि	शायद	आप (स) फ़रमा दें	वह - यह	कब	और कहेंगे	अपने सर

और हम ने इस क़ुरआन में तरह तरह से बयान किया है ताकि वह नसीहत पकड़ें, और (इस से) उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़्रत। (41)
आप (स) कह दें, अगर जैसे वह कहते हैं उस के साथ और माबूद होते तो उस सूरत में वह अ़र्श वाले की तरफ़ ज़रूर ढून्डते कोई रास्ता। (42)
वह उस से निहायत पाक है और बरतर जो वह कहते हैं। (43)
उस की पाकीज़गी बयान करते हैं सातों आस्मान और ज़मीन, और जो उन में है, कोई चीज़ नहीं मगर (हर शै) पाकीज़गी बयान करती है उस की हम्द के साथ, लेकिन तुम उन की तस्बीह नहीं समझते, बेशक वह बुर्दबार, बख़्शने वाला है। (44)
और जब तुम क़ुरआन पढ़ते हो, हम तुम्हारे और उन के दरमियान जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते कर देते (डाल देते) हैं एक छुपा हुआ (दबीज़) पर्दा। (45)
और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए के वह इसे न समझें, और उन के कानों में गिरानी है और जब तुम क़ुरआन में अपने यकता रब का ज़िक्र करते हो तो वह पीठ फेर कर नफ़्रत करते हुए भाग जाते हैं। (46)
हम ख़ूब जानते हैं कि वह उस को किस ग़र्ज़ से सुनते हैं जब वह तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब वह सरगोशी करते हैं (यानी) जब कहते हैं ज़ालिम कि तुम पैरवी नहीं करते मगर एक सिहरज़दा आदमी की। (47)
तुम देखो! उन्हों ने तुम पर कैसी मिसालें चस्पां कीं, सो वह गुमराह हुए, पस वह (सीधे) रास्ते की इस्तिताअ़त नहीं पाते। (48)
और वह कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो गए, क्या हम यक़ीनन फिर नई पैदाइश (अज़ सर नौ) जी उठेंगे? (49)
कह दें तुम पत्थर या लोहा हो जाओ, (50)
या कोई और मख़्लूक़ जो तुम्हारे ख़यालों में उस से भी बड़ी हो।
फिर अब कहेंगे हमें कौन लौटाएगा। आप (स) फ़रमा दें, वह जिस ने तुम्हें पैदा किया पहली बार, तो वह तुम्हारी तरफ़ अपने सर मटकाएंगे और कहेंगे यह कब होगा (क़ियामत कब आएगी)? आप (स) फ़रमा दें, शायद कि क़रीब ही हो। (51)

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا

सिर्फ़	तुम रहे	कि	और तुम ख़याल करोगे	उस की तारीफ़ के साथ	तो तुम जवाब दोगे (तामील करोगे)	वह पुकारेगा तुम्हें	जिस दिन

ع ١٢ ٥ قَلِيْلًا ﴿٥٢﴾ وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ

फ़साद डालता है	शैतान	बेशक	सब से अच्छी	वह	वह जो	वह कहें	मेरे बन्दों को	और फ़रमा दें	52	थोड़ी देर

بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ

तुम्हें	ख़ूब जानता है	तुम्हारा रब	53	खुला	दुश्मन	इन्सान का	है	शैतान	बेशक	उन के दरमियान

اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾

54	दारोग़ा	उन पर	हम ने तुम्हें भेजा	और नहीं	तुम्हें अ़ज़ाब दे	वह चाहे	अगर	या	तुम पर रह्म करे वह	वह चाहे	अगर

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ

बाज़	और तहक़ीक़ हम ने फ़ज़ीलत दी	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	में	जो कोई	ख़ूब जानता है	और तुम्हारा रब

النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

तुम गुमान करते हो	वह जिन को	पुकारो तुम	कह दें	55	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी	बाज़ पर	नबी (जमा)

مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾ اُولٰٓئِكَ

वह लोग	56	बदलना	और न	तुम से	तक्लीफ़	दूर करना	पस वह इख़्तियार नहीं रखते	उस के सिवा

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ

और वह उम्मीद रखते हैं	ज़ियादा क़रीब	उन से कौन	वसीला	अपना रब	तरफ़	ढून्डते हैं	वह पुकारते हैं	जिन्हें

رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾ وَاِنْ

और नहीं	57	डर की बात	है	तेरा रब	अ़ज़ाब	बेशक	उस का अ़ज़ाब	और वह डरते हैं	उस की रहमत

مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا

अ़ज़ाब	उसे अ़ज़ाब देने वाले	या	क़ियामत का दिन	पहले	उसे हलाक करने वाले	हम	मगर	कोई बस्ती

شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ

हम भेजें	कि	और नहीं हमें रोका	58	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	सख़्त

بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً

दिखाने को (ज़रीआए बसीरत)	ऊँटनी	समूद	और हम ने दी	अगले लोग (जमा)	उन को	झुटलाया	यह कि	मगर	निशानियां

فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ

तुम्हारा रब	बेशक	तुम से	हम ने कहा	और जब	59	डराने को	मगर	निशानियां	और हम नहीं भेजते	उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया

اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ

और (थोहर का) दरख़्त	लोगों के लिए	आज़माइश	मगर	हम ने तुम्हें दिखाई	वह जो कि	तुमाइश	और हम ने नहीं किया	लोगों को	अहाता किए हुए

ع ٦ ٨ ٦ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ؕ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾

60	बड़ी	सरकशी	मगर (सिर्फ़)	तो नहीं बढ़ती उन्हें	और हम डराते हैं उन्हें	क़ुरआन में	जिस पर लानत की गई

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उस की तारीफ़ के साथ तामील करोगे (क़ब्रों से निकल आओगे) और तुम ख़याल करोगे कि तुम (दुनिया में) रहे हो सिर्फ़ थोड़ी देर। (52)

और आप (स) मेरे बन्दों को फ़रमा दें कि (बात) वह कहें जो सब से अच्छी हो, बेशक शैतान उन के दरमियान फ़साद डाल देता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (53)

तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रह्म करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अ़ज़ाब दे, और हम ने तुम्हें उन पर दारोग़ा (बना कर) नहीं भेजा। (54)

और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आस्मानों में और ज़मीन में है, और तहक़ीक़ हम ने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी, और हम ने दाऊद (अ) को ज़बूर दी। (55)

आप (स) कह दें पुकारो उन्हें जिन को तुम उस के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, पस वह इख़्तियार नहीं रखते तुम से तक्लीफ़ दूर करने का, और न (तक्लीफ़) बदलने का। (56)

वह लोग जिन्हें यह पुकारते हैं वह (ख़ुद) ढून्डते हैं अपने रब की तरफ़ वसीला कि उन में से कौन बहुत ज़ियादा क़रीब हो जाए, और उस की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और वह उस के अ़ज़ाब से डरते हैं, बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब डर (ही) की बात है। (57)

और कोई (नाफ़रमान) बस्ती नहीं मगर हम उसे हलाक करने वाले हैं, क़ियामत के दिन से पहले, या उसे सख़्त अ़ज़ाब देने वाले हैं, यह किताब में है लिखा हुआ। (58)

और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर (इस बात ने) कि उन को अगलों ने झुटलाया, और हम ने समूद को ऊँटनी दी ज़री-ए-बसीरत ओ इब्रत, उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया, और हम निशानियां नहीं भेजते मगर (सिर्फ़) डराने को। (59)

और जब हम ने तुम से कहा कि बेशक तुम्हारा रब लोगों को (अहाता) क़ाबू किए हुए है, और हम ने जो नुमाइश तुम्हें दिखाई वह हम ने नहीं किया मगर लोगों की आज़माइश के लिए, और थोहर का दरख़्त जिस पर क़ुरआन में लानत की गई है, और हम उन्हें डराते हैं तो उन्हें बढ़ती है सिर्फ़ सरकशी। (60)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ

उस ने कहा	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिज्दा किया	आदम (अ) को	तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों से	हम ने कहा	और जब

ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿٦١﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ كَرَّمْتَ

तू ने इज़्ज़त दी	वह जिसे	यह	भला तू देख	उस ने कहा	61	मिट्टी से	तू ने पैदा किया	उस को जिसे	क्या मैं सिज्दा करूँ

عَلَىَّ ؗ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا

सिवाए	उस की औलाद	जड़ से उखाड़ दूँगा ज़रूर	रोज़े क़ियामत	तक	तू मुझे ढील दे	अलबत्ता अगर	मुझ पर

قَلِيْلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ

तुम्हारी सज़ा	जहन्नम	तो बेशक	उन में से	तेरी पैरवी की	पस जिस	तू जा	उस ने फ़रमाया	62	चन्द एक

جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ

अपनी आवाज़ से	उन में से	तेरा बस चले	जो - जिस	और फुसला ले	63	भरपूर	सज़ा

وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى الْاَمْوَالِ

माल (जमा)	में	और उन से साझा कर ले	और पयादे	अपने सवार	उन पर	और चढ़ा ला

وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾ اِنَّ عِبَادِىْ

मेरे बन्दे	बेशक	64	धोका	मगर (सिर्फ़)	शैतान	और नहीं उन से वादा करता	और वादे कर उन से	और औलाद

لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾ رَبُّكُمُ الَّذِىْ

वह जो कि	तुम्हारा रब	65	कारसाज़	तेरा रब	और काफ़ी	ज़ोर - ग़ल्बा	उन पर	तेरा	नहीं

يُزْجِىْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِى الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ

तुम पर	है	बेशक वह	उस का फ़ज़्ल	से	ताकि तुम तलाश करो	दर्या में	कश्ती	तुम्हारे लिए	चलाता है

رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ

तुम पुकारते थे	जो	गुम हो जाते हैं	दर्या में	तक्लीफ़	तुम्हें छूती (पहुँचती) है	और जब	66	निहायत मेहरबान

اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ

इन्सान	और है	तुम फिर जाते हो	खुश्की की तरफ़	वह तुम्हें बचा लाया	फिर जब	उस के सिवा

كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ

वह भेजे	या	खुश्की की तरफ़	तुम्हें	धंसा दे	कि	सो क्या तुम निडर हो गए हो	67	बड़ा नाशुक्रा

عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ

कि	तुम बेफ़िक्र हो गए	या	68	कोई कारसाज़	अपने लिए	तुम न पाओ	फिर	पत्थर बरसाने वाली हवा	तुम पर

يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ

से - का	सख़्त झोंका	तुम पर	फिर भेज दे वह	दोबारा	उस में	वह तुम्हें ले जाए

الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾

69	पीछा करने वाला	उस पर	हम पर (हमारा)	अपने लिए	तुम न पाओ	फिर	तुम ने नाशुक्री की	बदले में	फिर तुम्हें ग़र्क़ कर दे	हवा

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अ) को सिज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा उन सब ने सिज्दा किया, उस ने कहा क्या मैं उसे सिज्दा करूँ? जिसे तू ने मिट्टी से पैदा किया। (61)
उस ने कहा भला देख तो यह है वह जिसे तू ने मुझ पर इज़्ज़त दी, अलबत्तता अगर तू मुझे रोज़े क़ियामत तक ढील दे तो मैं चन्द एक के सिवा उस की औलाद को ज़रूर जड़ से उखाड़ दूँगा। (62)
उस ने फ़रमााया तू जा, पस उन में से जिस ने तेरी पैरवी की तो बेशक जहन्नम तुम्हारी सज़ा है, सज़ा भी भरपूर। (63)
और फुसला ले जिस पर तेरा बस चले उन में से अपनी आवाज़ से, और उन पर अपने सवार और पयादे चढ़ा ला, और उन से साझा कर ले माल और औलाद में, और उन से वादे कर, और उन से शैतान का वादा करना सिर्फ़ धोका है।। (64)
बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, और तेरा रब काफ़ी है कारसाज़। (65)
तुम्हारा रब वह है जो कि तुम्हारे लिए दर्या में किश्ती चलाता है ताकि तुम उस का फ़ज़्ल (रिज़्क़) तलाश करो, बेशक वह तुम पर निहायत मेहरबान है। (66)
ओर जब तुम्हें दर्या में तक्लीफ़ पहुँचती है तो गुम हो जाते हैं (भूल जाते हो) जिन्हें उस के सिवा तुम पुकारते थे, फिर जब वह तुम्हें बचा लाया, खुश्की की तरफ़, तो तुम फिर जाते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (67)
सो क्या तुम निडर हो गए हो कि वह ज़मीन में धंसा दे तुम्हें खुश्की की तरफ़ (ले जा कर) या तुम पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजे, फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पाओ। (68)
या तुम बेफ़िक्र हो गए हो कि वह तुम्हें दोबारा उस (दर्या) में ले जाए, फिर तुम पर हवा का सख़्त झोंका (तूफ़ान) भेज दे फिर तुम्हें नाशुक्री के बदले में ग़र्क़ कर दे, फिर तुम अपने लिए उस पर हमारा कोई पीछा करने वाला न पाओ। (69)

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ

से	और हम ने उन्हें रिज़्क़ दिया	और दर्या	ख़ुश्की में	दी	और हम ने उन्हें सवारी	औलादे आदम (अ)	हम ने इज़्ज़त बख़्शी	और तहक़ीक़

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰي كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝٧٠ يَوْمَ ع ١٠ ٧

जिस दिन	70	बड़ाई दे कर	हम ने पैदा किया (अपनी मख़लूक़)	उस से जो	बहुत सी	पर	और हम ने उन्हें फ़ज़ीलत दी	पाकीज़ा चीज़ें

نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ

तो वह लोग	उस के दाएं हाथ में	उसकी किताब	दिया गया	पस जो	उन के पेश्वाओं के साथ	तमाम लोग	हम बुलाएंगे

يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝٧١ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ

इस (दुनिया) में	और जो रहा	71	एक धागे बराबर	और न वह ज़ुल्म किए जाएंगे	अपना आमाल नामा	पढ़ेंगे	

اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٧٢ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ

कि तुम्हें बिचला दें	वह क़रीब था	और तहक़ीक़	72	रास्ता	और बहुत भटका हुआ	अन्धा	आख़िरत में	पस वह	अन्धा

عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ

अलबत्ता वह तुम्हें बना लेते	और उस सूरत में	इस के सिवा	हम पर	ताकि तुम झूट बान्धो	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि की	वह जो	से

خَلِيْلًا ۝٧٣ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـــًٔا قَلِيْلًا ۝٧٤ لا

74	थोड़ा	कुछ	उनकी तरफ़	अलबत्ता तुम झुकने लगते	हम तुम्हें साबित क़दम रखते	यह कि	और अगर न	73	दोस्त

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ

अपने लिए	तुम ने पाते	फिर	मौत	और दुगनी	ज़िन्दगी	दुगनी	उस सूरत में हम तुम्हें चखाते

عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝٧٥ وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ

ताकि वह तुम्हें निकाल दें	ज़मीन (मक्का)	से	कि तुम्हें फिसला ही दें	क़रीब था	और तहक़ीक़	75	कोई मददगार	हम पर (हमारे मुक़ाबले में)

مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٧٦ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजा	जो	सुन्नत	76	थोड़ा	मगर	तुम्हारे पीछे	वह न ठहर पाते	और उस सूरत में	यहां से

قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ۝٧٧ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ ع ٨ ٨

ढलने से	नमाज़	क़ाइम करें आप (स)	77	कोई तबदीली	हमारी सुन्नत में	और तुम ने पाओगे	अपने रसूल (जमा)	से	आप से पहले

الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ

है	सुबह का क़ुरआन	बेशक	सुबह (फ़ज्र)	और क़ुरआन	रात	अन्धेरा	तक	सूरज

مَشْهُوْدًا ۝٧٨ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ

कि तुम्हें खड़ा करे	क़रीब	तुम्हारे लिए	नफ़िल (ज़ाइद)	इस (क़ुरआन) के साथ	सो बेदार रहें	रात	और कुछ हिस्सा	78	हाज़िर किया गया (फ़रिश्तों को)

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝٧٩ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ

सच्चा	दाख़िल करना	मुझे दाख़िल कर	ऐ मेरे रब	और कहें	79	मुक़ामे महमूद	तुम्हारा रब

وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝٨٠

80	मदद देने वाला	ग़ल्बा	अपनी तरफ़ से	मेरे लिए	और अता कर	सच्चा	निकालना	और मुझे निकाल

और तहक़ीक़ हम ने औलादे आदम (अ) को इज़्ज़त बख़्शी, और हम ने उन्हें ख़ुश्की और दर्या में सवारी दी, और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, और हम ने उन्हें अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर बड़ाई दे कर फ़ज़ीलत दी। (70)

जिस दिन हम तमाम लोगों को बुलाएंगे उन के पेशवाओं के साथ, पस जिस को उस की किताब (आमाल नामा) दाएं हाथ में दी गई तो वह लोग अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और वह ज़ुल्म न किए जाएंगे एक धागे के बराबर (भी)। (71)

और जो इस दुनिया में अन्धा रहा पस वह आख़िरत में (भी) अन्धा (उठेगा) और रास्ते से भटका हुआ। (72)

और उस वहि से जो हम ने तुम्हारी तरफ़ की है क़रीब था कि वह तुन्हें उस से बिचला दें (फिसला दें) ताकि हम पर उस (वहि) के सिवा तुम झूट बान्धो और उस सूरत में अलबत्ता वह तुम्हें दोस्त बना लेते। (73)

और अगर हम तुम्हें साबित क़दम न रखते तो अलबत्ता तुम उन की तरफ़ झुकने लगते कुछ थोड़ा सा। (74)

उस सूरत में हम तुम्हें ज़िन्दगी में दुगनी (सज़ा) चखाते और दुगनी मौत (के बाद), फिर तुम अपने लिए न पाते हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार। (75)

और तहक़ीक़ क़रीब था कि वह तुम्हें सरज़मीने मक्का से फिसला ही दें ताकि वह तुम्हें यहां से निकाल दें और उस सूरत में वह तुम्हारे पीछे न ठहर पाते मगर थोड़ा (अर्सा)। (76)

आप (स) से पहले जो रसूल हम ने भेजे (यही) सुन्नत (चली आ रही) है और तुम हमारी सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे। (77)

सूरज ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ क़ाइम करें, और सुबह का क़ुरआन, बेशक सुबह का क़ुरआन (पढ़ने में फ़िरिश्ते) हाज़िर होते हैं। (78)

और रात का कुछ हिस्सा क़ुरआन की तिलावत के साथ बेदार रहें, यह तुम्हारे लिए ज़ाइद है, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें मुक़ामे महमूद में खड़ा कर दे। (79)

और आप (स) कहें ऐ मेरे रब! मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना, और मुझे निकाल सच्चा निकालना (अच्छी तरह), और अपनी तरफ़ से मेरे लिए अता कर ग़ल्बा, मदद देने वाला। (80)

وَقُـلْ جَـآءَ الْـحَـقُّ وَزَهَـقَ الْـبَـاطِلُ ؕ اِنَّ الْـبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾

81	है ही मिटने वाला	बातिल	बेशक	बातिल	और नाबूद हो गया	आया हक़	और कह दें आप (स)

وَنُـنَـزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ

और नहीं ज़ियादा होता	मोमिनों के लिए	और रहमत	वह शिफ़ा	जो	कुरआन	से	और हम नाज़िल करते हैं

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ

वह रूगर्दान हो जाता है	इन्सान	पर - को	हम नेमत बख़्शते हैं	और जब	82	घाटा	सिवाए	ज़ालिम (जमा)

وَنَا بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـئُوْسًا ﴿٨٣﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى

पर	काम करता है	कह दें हर एक	83	मायूस	वह हो जाता	बुराई	उसे पहुँचती है	और जब	और पहलू फेर लेता है

ع ٩ ٩ شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ

और आप (स) से पूछते हैं	84	रास्ता	ज़ियादा सहीह	कि वह कौन	खूब जानता है	सो तुम्हारा परवरदिगार	अपना तरीक़ा

عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

इल्म से	तुम्हें दिया गया	और नहीं	मेरा रब	हुक्म से	रूह	कह दें	रूह	से - के बारे में

اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि की	वह जो कि	तो अलबत्ता हम ले जाएं	हम चाहें	और अगर	85	थोड़ा सा	मगर

ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾ ۙ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ

बेशक उस का फ़ज़्ल	तुम्हारे रब से	रहमत	मगर	86	कोई मददगार	हमारे (मुक़ाबले) पर	उस के लिए	अपने वास्ते	फिर तुम न पाओ

كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى

पर	और जिन	तमाम इन्सान	जमा हो जाएं	अगर	कह दें	87	बड़ा	तुम पर	है

اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ

उन के बाज़	और अगरचे हो जाएं	इस के मानिंद	न ला सकेंगे	इस कुरआन	मानिंद	वह लाएं	कि

لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ

से	इस कुरआन	में	लोगों के लिए	और हम ने तरह तरह से बयान किया है	88	मददगार	बाज़ के लिए

كُلِّ مَثَلٍ ۫ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ

तुझ पर	हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे	और वह बोले	89	नाशुक्री	सिवाए	अक्सर लोग	पस कुबूल न किया	हर मिसाल

حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ ۙ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ

से - का	एक बाग़	तेरे लिए	या हो जाए	90	कोई चश्मा	ज़मीन से	हमारे लिए	तू रवां कर दे	यहां तक कि

نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ ۙ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ

आस्मान	तू गिरा दे	या	91	बहती हुई	उस के दरमियान	नहरें	पस तू रवां कर दे	और अंगूर	खजूर (जमा)

كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾ ۙ

92	रूबरू	और फ़रिश्ते	अल्लाह को	या तू ले आ	टुकड़े	हम पर	जैसा कि तू कहा करता है

और कह दें हक़ आया और बातिल नाबूद हो गया, बेशक बातिल है ही मिटने वाला (नीस्त औ नाबूद होने वाला)। (81) और हम कुरआन नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है, और ज़ालिमों के लिए ज़ियादा नहीं होता घाटे के सिवा। (82) और जब हम इन्सान को नेमत बख़्शते हैं वह रूगर्दान हो जाता है, और पहलू फेर लेता है, और जब उसे बुराई पहुँचती है तो वह मायूस हो जाता है। (83) कह दें हर एक अपने तरीक़े पर काम करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है कि कौन ज़ियादा सहीह रास्ते पर है? (84) और वह आप (स) से रूह के मुतअ़ल्लिक़ पूछते हैं, आप (स) कह दें रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा। (85) और अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम ले जाएं (सल्ब कर लें) जो वहि हम ने तुम्हारी तरफ़ की है, फिर तुम उस के लिए अपने वास्ते न पाओ हमारे मुक़ाबले पर कोई मददगार। (86) मगर तुम्हारे रब की रहमत से है (कि ऐसा नहीं होता), बेशक तुम पर उस का बड़ा फ़ज़्ल है। (87) आप (स) कह दें अगर तमाम इन्सान और जिन (इस बात) पर जमा हो जाएं कि वह इस कुरआन के मानिंद ले आएं तो वह इस के मानिंद न ला सकेंगे अगरचे उन के बाज़, बाज़ के लिए (वह एक दूसरे के) मददगार हो जाएं। (88) और हम ने लोगों के लिए इस कुरआन में तरह तरह से बयान कर दी है हर मिसाल, पस अक्सर लोगों ने नाशुक्री के सिवा कुबूल न किया। (89) और वह बोले कि हम तुझ पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, यहां तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा रवां कर दे। (90) या तेरे लिए खजूरों और अंगूर का एक बाग़ हो, पस तू उस के दरमियान बहती नहरें रवां कर दे। (91) या जैसे तू कहा करता है हम पर आस्मान के टुकड़े गिरा दे, या अल्लाह को और फ़रिश्तों को रूबरू ले आ। (92)

या तेरे लिए सोने का एक घर हो, या तू आस्मान में चढ़ जाए, और हम हरगिज़ तेरे चढ़ने को न मानेंगे जब तक तू हम पर एक किताब न उतारे जिसे हम पढ़ लें, आप (स) कह दें पाक है मेरा रब, मैं सिर्फ़ एक बशर हूँ (अल्लाह का) रसूल। (93)

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान लाएं जब उन के पास हिदायत आ गई, मगर यह कि उन्हों न कहा क्या अल्लाह ने एक बशर को रसूल (बना कर) भेजा है? (94)

आप (स) कह दें, अगर होते ज़मीन में फ़रिश्ते चलते फिरते, इत्मीनान से रहते तो हम ज़रूर उन पर आस्मानों से फ़रिश्ते रसूल (बना कर) उतारते। (95)

आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है, बेशक वह अपने बन्दों का ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (96)

और जिसे अल्लाह हिदायत दे पस वही हिदायत पाने वाला है, और जिसे वह गुमराह करे पस तू उन के लिए उस के सिवा हरगिज़ कोई मददगार न पाएगा, और हम क़ियामत के दिन उन्हें उन के चहरों के बल अन्धे और गूंगे और बहरे उठाएंगे, उन का ठिकाना जहन्नम है, जब कभी जहन्नम की आग बुझने लगेगी हम उन के लिए और भड़का देंगे। (97)

यह उन की सज़ा है क्यों कि उन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया और उन्हों ने कहा क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, क्या हम अज़ सरे नौ पैदा कर के ज़रूर उठाए जाएंगे? (98)

क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है इस पर क़ादिर है कि उन जैसे पैदा करे, और उस ने उन के लिए मुक़र्रर किया एक वक़्त, इस में कोई शक नहीं, ज़ालिमों ने नाशुक्री के सिवा क़ुबूल न किया। (99)

आप कह दें अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से ज़रूर बन्द रखते, और इन्सान बहुत तंग दिल है। (100)

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِى السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ									
और हम हरगिज़ न मानेंगे	आस्मान में	तू चढ़ जाए	या	सोना	से - का	एक घर	तेरे लिए	हो	या
لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ									
नहीं हूँ मैं	मेरा रब	पाक है	आप कह दें	हम पढ़ लें जिसे	एक किताब	हम पर	तू उतारे	यहां तक कि	तेरे चढ़ने को
اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ									
उन के पास आ गई	जब	कि वह ईमान लाएं	लोग (जमा)	रोका	और नहीं	93	रसूल	एक बशर	मगर - सिर्फ़
الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ									
अगर होते	कह दें	94	रसूल	एक बशर	अल्लाह	क्या भेजा	उन्हों ने कहा	यह कि	मगर	हिदायत
فِى الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ									
आस्मान से	उन पर	हम ज़रूर उतारते	इत्मीनान से रहते	चलते फिरते	फ़रिश्ते	ज़मीन में			
مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ									
है	बेशक वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह की	काफ़ी है	कह दें	95	रसूल	फ़रिश्ता
بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ بَصِيْرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ									
और जिसे	हिदायत पाने वाला	पस वही	अल्लाह	हिदायत दे	और जिसे	96	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों का
يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ									
क़ियामत के दिन	और हम उठाएंगे उन्हें	उस के सिवा	मददगार	उन के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे			
عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ									
बुझने लगेगी	जब कभी	जहन्नम	उन का ठिकाना	और बहरे	और गूंगे	अन्धे	उन के चहरे	पर - बल	
النصف زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا									
और उन्हों ने कहा	हमारी आयतों का	उन्हों ने इन्कार किया	क्यों कि वह	उन की सज़ा	यह	97	भड़काना	हम उन के लिए ज़ियादा कर देंगे	
ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾									
98	अज़ सरे नौ	पैदा कर के	ज़रूर उठाए जाएंगे	क्या हम	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां	हो जाएंगे हम	क्या जब	
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى									
पर	क़ादिर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जिस ने	अल्लाह	कि	उन्हों ने देखा	क्या नहीं
اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ									
ज़ालिम (जमा)	तो क़ुबूल न किया	उस में	नहीं शक	एक वक़्त	उन के लिए	उस ने मुक़र्रर किया	उन जैसे	कि वह पैदा करे	
اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّىْٓ اِذًا									
जब	मेरा रब	रहमत	ख़ज़ाने	मालिक होते	तुम	अगर	आप कह दें	99	नाशुक्री के सिवा
لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾									
100	तंग दिल	इन्सान	और है	ख़र्च हो जाना	डर से	तुम ज़रूर बन्द रखते			

ع ١٠ ١٠

ع ١١ ١١

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ

उन के पास आया	जब	बनी इस्राईल	पस पूछ तू	खुली निशानियां	नौ (9)	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दीं

فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿۱۰۱﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ

अलबत्ता तू ने जान लिया	उस ने कहा	101	जादू किया गया	ऐ मूसा	तुझ पर गुमान करता हूँ	बेशक मैं	फ़िरऔन	उस को	तो कहा

مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ

तुझ पर गुमान करता हूँ	और बेशक मैं	बसीरत (जमा)	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	मगर	इस को	नहीं नाज़िल किया

يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ

तो हम ने उसे ग़र्क़ कर दिया	ज़मीन से	उन्हें निकाल दे	कि	पस उस ने इरादा किया	102	हलाक शुदा	ऐ फ़िरऔन

وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ۙ﴿۱۰۳﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا

तुम रहो	बनी इस्राईल को	उस के बाद	और हम ने कहा	103	सब	उसके साथ	और जो

الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ؕ﴿۱۰۴﴾ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ

हम ने इसे नाज़िल किया	और हक़ के साथ	104	जमा कर के	तुम को	हम ले आएंगे	आख़िरत का वादा	आएगा	फिर जब	ज़मीन (मुल्क)

وقف لازم

وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ

हम ने जुदा जुदा किया	और क़ुरआन	105	और डर सुनाने वाला	मगर ख़ुशख़बरी देने वाला	हम ने आप (स) को भेजा	और नहीं	नाज़िल हुआ	और सच्चाई के साथ

لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ

या	तुम इस पर ईमान लाओ	आप कह दें	106	आहिस्ता आहिस्ता	और हम ने उसे नाज़िल किया	ठहर ठहर कर	लोग	पर	ताकि तुम उसे पढ़ो

لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ

उन के सामने	वह पढ़ा जाता है	जब	इस से क़ब्ल	इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	बेशक	तुम ईमान न लाओ

يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ﴿۱۰۷﴾ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ

है	बेशक	हमारा रब	पाक है	और वह कहते हैं	107	सिजदा करते हुए	ठोड़ियों के बल	वह गिर पड़ते हैं

وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ

और उन में ज़ियादा करता है	रोते हुए	ठोड़ियों के बल	और वह गिर पड़ते हैं	108	ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला	हमारा रब	वादा

السجدة ٤

خُشُوْعًا ۩ ﴿۱۰۹﴾ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ

सो उसी के लिए	तुम पुकारोगे	जो कुछ भी	रहमान	या तुम पुकारो	अल्लाह	तुम पुकारो	आप कहदें	109	आजिज़ी

الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ

उस के दरमियान	और ढून्डो	उस में	और न बिलकुल पस्त करो तुम	अपनी नमाज़ में	और न बुलन्द करो तुम	सब से अच्छे नाम

سَبِيْلًا ﴿۱۱۰﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

उस के लिए	और नहीं है	कोई औलाद	नहीं बनाई	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	और कह दें	110	रास्ता

ع ١٢ ١١ ١٢ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿۱۱۱﴾

111	ख़ूब बड़ाई	और उस की बड़ाई करो	नातवानी	से, सबब	कोई मददगार	उस का	और नहीं है	सलतनत में	कोई शरीक

और हम ने मूसा (अ) को नौ (9) खुली निशानियां दीं, पस बनी इस्राईल से पूछ, जब वह (मूसा अ) उन के पास आए तो फ़िरऔन ने उस को कहा बेशक मैं गुमान करता हूँ तुम पर जादू किया गया है (सिहर ज़दा हो)। (101) उस ने कहा, अलबत्ता तू जान चुका है कि इस को नाज़िल नहीं किया मगर आस्मानों और ज़मीन के परवरदिगार ने बसीरत (समझ बूझ की बातें), और ऐ फ़िरऔन! बेशक मैं तुझे गुमान करता हूँ हलाक शुदा (हलाक हुआ चाहता है)। (102) पस उस ने इरादा किया कि उन्हें सरज़मीने (मिस्र) से निकाल दे तो हम ने उसे और जो उस के साथ थे सब को ग़र्क़ कर दिया। (103) और हम ने कहा उस के बाद बनी इस्राईल को कि तुम उस मुल्क में रहो, फिर जब आख़िरत का वादा आएगा हम तुम सब को ले आएंगे जमा कर के (समेट कर)। (104) और हम ने इसे (क़ुरआन को) हक़ के साथ नाज़िल किया और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ, और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर ख़ुश ख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (105) और क़ुरआन हम ने जुदा जुदा कर के (थोड़ा थोड़ा) नाज़िल किया ताकि तुम लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो, और हम ने उसे आहिस्ता आहिस्ता (बतद्रीज) नाज़िल किया। (106) आप (स) कह दें तुम उस पर ईमान लाओ या न लाओ, बेशक जिन्हें इस से क़ब्ल इल्म दिया गया है, जब वह उन के सामने पढ़ा जाता है तो वह सिजदा करते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं। (107) और वह कहते हैं हमारा रब पाक है, बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला है। (108) और वह रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और यह (क़ुरआन) उन में आजिज़ी और ज़ियादा करता है। (109) आप (स) कह दें तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर) जो कुछ भी पुकारोगे उसी के लिए हैं सब से अच्छे नाम, और न अपनी नमाज़ में (आवाज़ बहुत) बुलन्द करो और न उस में बिलकुल पस्त करो (बल्कि) उस के दरमियान का रास्ता ढून्डो। (110) और आप (स) कह दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने कोई औलाद नहीं बनाई, और सलतनत में उस का कोई शरीक नहीं, और न कोई उस का मददगार है नातवानी के सबब, और ख़ूब उस की बड़ाई (बयान) करो। (111)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद स) पर (यह) किताब नाज़िल की, और उस में कोई कजी न रखी। (1)

(बल्कि) ठीक सीधी (उतारी) ताकि डर सुनाए उस की तरफ़ से सख़्त अ़ज़ाब से, और मोमिनों को खुशख़बरी दे, जो अच्छे अ़मल करते हैं कि उन के लिए अच्छा अजर है, (2)

वह उस में हमेशा रहेंगे। (3)

और वह उन लोगों को डराए जिन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है। (4)

उस का न उन्हें कोई इल्म है और न उन के बाप दादा को था, बड़ी है बात (जो) उन के मुँह से निकलती है, वह नहीं कहते मगर झूट। (5)

तो शायद आप (स) उन के पीछे अपनी जान को हलाक करने वाले हैं, अगर वह ईमान न लाए इस बात पर, ग़म के मारे। (6)

जो कुछ ज़मीन में है, बेशक हम ने उसे उस के लिए ज़ीनत बनाया है ताकि हम उन्हें आज़माएं कि उन में कौन है अ़मल में बेहतर। (7)

और जो कुछ इस (ज़मीन) पर है बेशक हम उसे (नाबूद कर के) साफ़ चटयल मैदान करने वाले हैं। (8)

क्या तुम ने गुमान किया? कि कहफ़ (ग़ार) और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से अ़जीब थे। (9)

जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली तो उन्हों ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें अपनी तरफ़ से रहमत दे, और हमारे काम में दुरुस्ती मुहैया कर। (10)

पस हम ने पर्दा डाला उन के कानों पर, उन्हें ग़ार में कई साल (सुलाया)। (11)

آيَاتُهَا ١١٠ ❀ سُوْرَةُ الْكَهْفِ (١٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

रुकूआत 12	(18) सूरतुल कहफ़ ग़ार	आयात 110

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ

और न रखी	किताब (क़ुरआन)	अपने बन्दे पर	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें

لَّهٗ عِوَجًا ۜ ﴿١﴾ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ

और खुशख़बरी दे	उस की तरफ़ से	सख़्त	अ़ज़ाब	ताकि डर सुनाए	ठीक सीधी	1	कोई कजी	उस में

الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ﴿٢﴾

2	अच्छा अजर	कि उन के लिए	अच्छे	अ़मल करते हैं	वह जो	मोमिनों

مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ﴿٣﴾ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ

अल्लाह ने बना लिया है	वह जिन लोगों ने कहा	और वह डराए	3	हमेशा	उस में	वह रहेंगे

وَلَدًا ۗ﴿٤﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۭ كَبُرَتْ كَلِمَةً

बात	बड़ी है	उन के पाप दादा	और न	कोई इल्म	उन को उस का	नहीं	4	बेटा

تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ

तो शायद आप	5	झूट	मगर	वह कहते हैं	नहीं	उन के मुँह (जमा)	से	निकलती है

بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ

बात	इस	वह ईमान न लाए	अगर	उन के पीछे	पर	अपनी जान	हलाक करने वाला

اَسَفًا ﴿٦﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ

कौन उन में से	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उसके लिए	ज़ीनत	ज़मीन पर	जो	हम ने बनाया	बेशक हम	6	ग़म के मारे

اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۭ﴿٨﴾

8	बंजर (चटयल)	साफ़ मैदान	जो उस पर	अलबत्ता करने वाले	और बेशक हम	7	अ़मल में	बेहतर

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ

से	वह थे	और रक़ीम	असहाबे कहफ़ (ग़ार वाले)	कि	क्या तुम ने गुमान किया?

اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ

ऐ हमारे रब	तो उन्हों ने कहा	ग़ार	तरफ़-में	जवान (जमा)	पनाह ली	जब	9	हमारी निशानियां अ़जीब

اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾

10	दुरुस्ती	हमारे काम में	हमारे लिए	और मुहैया कर	रहमत	अपनी तरफ़ से	हमें दे

فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۙ﴿١١﴾

11	कई साल	ग़ार में	उन के कान (जमा)	पर	पस हम ने मारा (पर्दा डाला)

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ﴿۱۲﴾

12	मुद्दत	कितनी देर रहे	हिसाब रखा	दोनों गिरोह	कौन-किस	ताकि हम देखें	हम ने उन्हें उठाया	फिर

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ

अपने रब पर	वह ईमान लाए	चन्द नौजवान	बेशक वह	ठीक ठीक	उनका हाल	तुझ से	बयान करते हैं	हम

وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿۱۳﴾ وَّرَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا

तो उन्हों ने कहा	वह खड़े हुए	जब	उन के दिल	पर	और हम ने गिरह लगादी	13	हिदायत	और हम ने और ज़ियादा दी उन्हें

رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاْ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ

अलबत्ता हम ने कही	कोई माबूद	उस के सिवा	हम पुकारेंगे	हरगिज़ न	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	हमारा रब

اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ

और माबूद	उस के सिवा	उन्हों ने बना लिए	हमारी क़ौम	यह है	14	बेजा बात	उस वक़्त

لَوْ لَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی

इफ़्तिरा करे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	पस कौन	वाज़ेह	कोई दलील	उन पर	क्यों वह नहीं लाते

عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾ ؕ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ

अल्लाह के सिवा	और जो वह पूजते हैं	तुम ने उन से किनारा कर लिया	और जब	15	झूट	अल्लाह	पर

فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	मुहैया करेगा	अपनी रहमत	से	तुम्हारा रब	फैला देगा तुम्हें	ग़ार	तरफ़-में	तो पनाह लो

مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ

से	बच कर जाती है	वह निकलती है	जब	सूरज (धूप)	और तुम देखोगे	16	सहूलत	तुम्हारे काम	से

كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

बाएं तरफ़	उन से कतरा जाती है	वह ढल जाती है	और जब	दाएं तरफ़	उन का ग़ार

وَهُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ

हिदायत दे अल्लाह	जो - जिसे	अल्लाह की निशानियां	से	यह	उस (ग़ार) की	खुली जगह	में	और वह

فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾

17	सीधी राह दिखाने वाला	कोई रफ़ीक़	उस के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	वह गुमराह करे	और जो-जिस	पस वह हिदायत याफ़्ता

وَتَحْسَبُهُمْ اَیْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۚ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ

दाएं तरफ़	और हम बदलवाते हैं उन्हें	सोए हुए	हालांकि वह	बेदार	और तू उन्हें समझे

وَذَاتَ الشِّمَالِ ۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ

अगर तू झांकता	देहलीज़ पर	दोनों हाथ	फैलाए हुए	और उन का कुत्ता	और बाएं तरफ़

عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾

18	दहशत में	उन से	और तू भर जाता	भागता हुआ	उन से	तो पीठ फेरता	उन पर

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम देखें दोनों गिरोहों में से किस ने खूब याद रखा है कि वह कितनी मुद्दत (ग़ार में) रहे? (12)

हम तुझ से ठीक ठीक उन का हाल बयान करते हैं, वह चन्द नौजवान थे, वह ईमान लाए अपने रब पर, और हम ने उन्हें हिदायत और ज़ियादा दी। (13)

और हम ने उन के दिलों पर गिरह लगा दी (दिल पुख़्ता कर दिए) जब वह खड़े हुए तो उन्हों ने कहा हमारा रब परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का, हम उस के सिवाए हरगिज़ किसी को माबूद न पुकारेंगे (वरना) अलबत्ता उस वक़्त हम ने बेजा बात कही। (14)

यह है हमारी क़ौम, उस ने उस के सिवा और माबूद बना लिए, वह उन पर कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते? पस कौन है उस से बड़ा ज़ालिम जो अल्लाह पर झूट इफ़्तिरा करे। (15)

और जब तुम ने उन से और जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं उन से किनारा कर लिया है तो ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैलादेगा, और तुम्हारे काम में तुम्हारे लिए सहूलत मुहैया करेगा। (16)

और तुम देखोगे जब धूप निकलती है, वह उन की ग़ार से दाएं तरफ़ बच कर जाती है, और जब वह ढलती है तो उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाती है, और वह ग़ार की खुली जगह में हैं, यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिसे हिदायत दे अल्लाह, सो वही हिदायत याफ़्ता है और जिसे वह गुमराह करे तो उस के लिए हरगिज़ कोई रफ़ीक़, सीधी राह दिखाने वाला न पाओगे। (17)

और तू उन्हें बेदार समझे हालांकि वह सोए हुए हैं और हम उन्हें दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ (करवट) बदलवाते हैं, और उन का कुत्ता दोनों हाथ (पंजे) फैलाए हुए है देहलीज़ पर, अगर तू उन पर झांकता तो उन से पीठ फेर कर भागता, और उन से दहशत में भर जाता। (18)

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक कहने वाला	कहा	आपस में	ताकि वह एक दूसरे से सवाल करें	हम ने उन्हें उठाया	और उसी तरह

كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ

तुम्हारा रब	उन्हों ने कहा	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	उन्हों ने कहा	तुम कितनी देर रहे

اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ

यह	अपना रुपया दे कर	अपने में से एक	पस भेजो तुम	जितनी मुद्दत तुम रहे	खूब जानता है

اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ

खाना	तो वह तुम्हारे लिए ले आए	खाना	पाकीज़ा तर	कौन सा	पस वह देखे	शहर	तरफ़

مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾

19	किसी को	तुम्हारी	और वह ख़बर न दे बैठे	और नर्मी करे	उस से

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ

तुम्हें लौटा लेंगे	या	तुम्हें संगसार कर देंगे	तुम्हारी	अगर वह ख़बर पा लेंगे	बेशक वह

فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا

हम ने ख़बरदार कर दिया	और उसी तरह	20	उस सूरत में कभी	और तुम हरगिज़ फ़लाह न पाओगे	अपनी मिल्लत	में

عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ

कोई शक नहीं	क़ियामत	और यह कि	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि	ताकि वह जान लें	उन पर

فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا

बनाओ	तो उन्हों ने कहा	उन का मामला	आपस में	वह झगड़ते थे	जब	उस में

عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا

वह लोग जो ग़ालिब थे	कहा	ख़ूब जानता है उन्हें	उनका रब	एक इमारत	उन पर

عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوْلُوْنَ

अब वह कहेंगे	21	एक मस्जिद	उन पर	हम ज़रूर बनाएंगे	अपने काम	पर

ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ

उन का कुत्ता	उन का छटा	पाँच	और वह कहेंगे	उन का कुत्ता	उन का चौथा	तीन

رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ

कह दें आप (स)	उन का कुत्ता	और उन का आठवां	सात	और कहेंगे वह	बिन देखे	बात फैंकना

رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ

उन में	पस न झगड़ो	थोड़े	मगर सिर्फ़	उन्हें नहीं जानते हैं	उन की गिनती (तेदाद)	खूब जानता है	मेरा रब

اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ ع

22	किसी	उन में से	उनके (बारे में)	पूछ	और न	ज़ाहिरी (सरसरी)	बहस	सिवाए

ع ٣ ١٥

और हम ने उसी तरह उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें, उन में से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहां) कितनी देर रहे? उन्हों ने कहा हम रहे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्हों ने कहा तुम्हारा रब खूब जानता है तुम कितनी मुद्दत रहे हो? पस अपने में से एक को अपना यह रुपया दे कर भेजो शहर की तरफ़, पस वह देखे कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उस से तुम्हारे लिए ले आए और नर्मी करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न दे बैठे। (19)

बेशक अगर वह तुम्हारी ख़बर पालेंगे तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें लौटा लेंगे अपनी मिल्लत में, और उस सूरत में तुम हरगिज़ कभी फ़लाह न पाओगे। (20)

और उसी तरह हम ने (लोगों को) उन पर ख़बरदार किया ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, (याद करो) जब वह उन के मामले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्हों ने कहा उन पर एक इमारत बनाओ, उन का रब उन्हें खूब जानता है। जो लोग उन के काम पर ग़ालिब थे उन्हों ने कहा हम ज़रूर बनाएंगे उन पर एक मस्जिद (इबादतगाह)। (21)

अब (कुछ) कहेंगे वह तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे वह पाँच हैं और उन का छटा है उन का कुत्ता, बिन देखे फैंकते हैं (अटकल के तुक्के चला रहे हैं), कुछ कहेंगे वह सात हैं और आठवां उन का कुत्ता है, आप (स) कह दें मेरा रब खूब जानता है उन की तेदाद, उन्हें सिर्फ़ थोड़े जानते हैं, पस सरसरी बहस के सिवा उन के (बारे में) न झगड़ो, और न पूछो उन के बारे में उन में से किसी से। (22)

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان التّاء بعد الياء من النّصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير ١٢

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ

चाहे	यह कि	मगर	23	कल	यह	करने वाला हूँ	कि मैं	किसी काम को	और हरगिज़ न कहना तुम

اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ

कि मुझे हिदायत दे	उम्मीद है	और कह	तू भूल जाए	जब	अपना रब	और तू याद कर	अल्लाह

رَبِّیْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ

अपना ग़ार	में	और वह रहे	24	भलाई	उस से	बहुत ज़ियादा क़रीब की	मेरा रब

ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ

कितनी मुद्दत वह ठहरे	खूब जानता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	25	नौ (9)	और उन के ऊपर	साल	तीन सौ (300)

لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ

और क्या वह सुनता है	क्या वह देखता है	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	उसी को

مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

26	किसी को	अपने हुक्म में	और वह शरीक नहीं करता	कोई मददगार	उस के सिवा	उन के लिए नहीं

وَاتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ قف

उस की बातों को	नहीं कोई बदलने वाला	आप का रब	किताब	से	आप की तरफ़	जो वहि की गई	और आप पढ़ें

وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ

साथ	अपना नफ़्स (अपना आप)	और रोके रखो	27	कोई पनाह गाह	उस के सिवा	और तुम हरगिज़ न पाओगे

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ

उस का चेहरा (रज़ा)	वह चाहते हैं	और शाम	सुबह	अपना रब	वह लोग जो पुकारते हैं

وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया	ज़िन्दगी	आराइश	तुम तलबगार हो जाओ	उन से	तुम्हारी आँखें	न दौड़ें (न फिरें)

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ

और है	अपनी ख़ाहिश	और पीछे पड़ गया	अपना ज़िक्र	से	उस का दिल	हम ने ग़ाफ़िल कर दिया	जो - जिस	और कहा न मानो

الثلثة

اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ

सो ईमान लाए	चाहे	पस जो	तुम्हारा रब	से	हक़	और कह दें	28	हद से बढ़ा हुआ	उस का काम

وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا

आग	ज़ालिमों के लिए	हम ने तैयार किया	बेशक हम	सो कुफ़्र करे (न माने)	चाहे	और जो

اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ

पानी से	वह दाद रसी किए जाएंगे	वह फ़र्याद करेंगे	और अगर	उस की क़न्नातें	उन्हें	घेर लेंगी

كَالْمُهْلِ يَشْوِی الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

29	आराम गाह	और बुरी है	बुरा है पीना (मशरूब)	मुँह (जमा)	वह भून डालेगा	पिघले हुए तांम्बे की मानिंद

और हरगिज़ किसी काम को न कहना "कि मैं कल करने वाला हूँ" (कल कर दूँगा), (23) मगर "यह कि अल्लाह चाहे" (इनशा अल्लाह) और जब तू भूल जाए तो अपने रब को याद कर और कहो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे हिदायत दे उस से ज़ियादा क़रीब की भलाई की। (24) और वह उस ग़ार में तीन सौ (300) साल रहे, और उन के ऊपर नौ (309 साल)। (25) आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है वह कितनी मुद्दत ठहरे, उसी को है आस्मानों और ज़मीन का ग़ैब, क्या (खूब) वह देखता है और क्या (खूब) वह सुनता है! उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं, वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। (26) और आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ आप (स) के रब की किताब वहि की गई है, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम हरगिज़ न पाओगे उस के सिवा कोई पनाह गाह। (27) और अपने आप को उन लोगों के साथ रोके (लगाए) रखो जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं, और तुम्हारी आँखें उन से न फिरें कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश के तलबगार हो जाओ, और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया, और वह अपनी ख़ाहिश के पीछे पड़ गया, और उस का काम हद से बढ़ा हुआ है। (28) और आप (स) कह दें हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है, पस जो चाहे सो ईमान लाए और जो चाहे सो न माने, हम ने बेशक तैयार की है ज़ालिमों के लिए आग, उस की क़न्नातें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वह फ़र्याद करेंगे तो पिघले हुए ताम्बे के मानिंद (खौलते) पानी से दाद रसी किए जाएंगे, वह (उन के) मुँह भून डालेगा, बुरा है उन का मशरूब और बुरी है (उन की) आराम गाह (जहन्नम)। (29)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यक़ीनन हम उस का अजर ज़ाया नहीं करेंगे जिस ने अच्छा अ़मल किया। (30) यही लोग हैं उन के लिए हमेशगी के बाग़ात हैं, बहती हैं उन के नीचे नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, और वह कपड़े पहनेंगे सब्ज़ बारीक रेशम के और दबीज़ रेशम के, उस में वह मसहरियों पर तकिया लगाए हुए होंगे, अच्छा बदला और खूब है आराम गाह। (31) और आप (स) उन के लिए दो आदमियों का हाल बयान करें, हम ने उन में से एक के लिए दो (2) बाग़ बनाए अंगूरों के, और हम ने उन्हें खजूरों के दरख़्तों (की बाड़) से घेर लिया, और उन के दरमियान खेती रखी। (32) दोनों बाग़ अपने फल लाए, और उस (पैदावार) में कुछ कमी न करते थे, और हम ने उन दोनों के दरमियान में एक नहर जारी कर दी। (33) और उस के लिए (बहुत) फल था तो वह अपने साथी से बोला, मैं माल में तुझ से ज़ियादा तर हूँ, और आदमियों (जत्थे) के लिहाज़ से ज़ियादा बाइज़्ज़त हूँ। (34) और वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ (इस हाल में कि) वह अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहा था, वह बोला मैं गुमान नहीं करता कि यह कभी बरबाद होगा। (35) और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत बरपा होने वाली है, और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा। (36) उस के साथी ने उस से कहा और वह उस से बातें कर रहा था, क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है? जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर उस ने तुझे बनाया (पूरा) मर्द। (37) लेकिन मैं (कहता हूँ) वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (38)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ

जो - जिस	अजर	हम ज़ाया नहीं करेंगे	यक़ीनन हम	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक

اَحْسَنَ عَمَلًا ۚ ﴿٣٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ

बहती हैं	हमेशगी	बाग़ात	उन के लिए	यही लोग	30	अ़मल	अच्छा किया

مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

सोना	से	कंगन	से	उस में	पहनाए जाएंगे	नहरें	उन के नीचे

وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ

तकिया लगाए हुए	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से - के	सब्ज़ रंग	कपड़े	और वह पहनेंगे

فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۭ نِعْمَ الثَّوَابُ ۭ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۧ ﴿٣١﴾ وَاضْرِبْ ع ٩ ١٦

और बयान करें आप (स)	31	आराम गाह	और खूब है	बदला	अच्छा	तख़्तों (मसहरियों) पर	उस में

لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ

अंगूर (जमा)	से - के	दो बाग़	उन में एक के लिए	हम ने बनाए	दो आदमी	मिसाल (हाल)	उन के लिए

وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۭ ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ

दोनों बाग़	32	खेती	उन के दरमियान	और बना दी (रखी)	खजूरों के दरख़्त	और हम ने उन्हें घेर लिया

اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۙ ﴿٣٣﴾

33	एक नहर	दोनों के दरमियान	और हम ने जारी करदी	कुछ	उस से	और कम न करते थे	अपने फल	लाए

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ

मैं ज़ियादा तर	उस से बातें करते हुए	और वह	अपने साथी से	तो वह बोला	फल	उस के लिए	और था

مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ

और वह	अपना बाग़	और वह दाख़िल हुआ	34	आदमियों के लिहाज़ से	और ज़ियादा बाइज़्ज़त	माल में	तुझ से

ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۙ ﴿٣٥﴾

35	कभी	यह	बरबाद होगा	कि	मैं गुमान नहीं करता	वह बोला	अपनी जान पर	ज़ुल्म कर रहा था

وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ

मैं ज़रूर पाऊँगा	अपना रब	तरफ़	मैं लौटाया गया	और अगर	क़ाइम (बरपा)	क़ियामत	और मैं गुमान नहीं करता

خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ

उस से बातें कर रहा था	और वह	उस का साथी	उस से	कहा	36	लौटने की जगह	इस से	बेहतर

اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ

फिर	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	तुझे पैदा किया	उस के साथ जिस ने	क्या तू कुफ़्र करता है

سَوّٰىكَ رَجُلًا ۭ ﴿٣٧﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٣٨﴾

38	किसी को	अपने रब के साथ	और मैं शरीक नहीं करता	मेरा रब	वह अल्लाह	लेकिन मैं	37	मर्द	तुझे पूरा बनाया

وَلَوْ لَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ

अल्लाह की	मगर	नहीं क़ुव्वत	जो चाहे अल्लाह	तू ने कहा	अपना बाग़	तू दाख़िल हुआ	जब	और क्यों न

اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ

कि	मेरा रब	तो क़रीब	39	और औलाद में	माल में	अपने से	कम तर	मुझे	अगर तू मुझे देखता है

يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	आफ़त	उस पर	और भेजे	तेरा बाग़	से	बेहतर	मुझे दे

فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ

फिर तू हरगिज़ न कर सके	ख़ुश्क	उस का पानी	हो जाए	या	40	चटयल	मिट्टी का मैदान	फिर वह हो कर रह जाए

لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى

पर	अपने हाथ	वह मलने लगा	पस वह रह गया	उस के फल	और घेर लिया गया	41	तलब (तलाश)	उस को

مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ

ऐ काश	और वह कहने लगा	अपनी छतरियां	पर	गिरा हुआ	और वह	उस में	जो उस ने ख़र्च किया

لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ

उस की मदद करती वह	कोई जमाअ़त	उस के लिए	और न होती	42	किसी को	अपने रब के साथ	मैं शरीक न करता

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ

इख़्तियार	यहां	43	बदला लेने के क़ाबिल	वह था	और न	अल्लाह के सिवा	से

ع ١٣ ١٧ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ

उन के लिए	और बयान कर दें	44	बदला देने में	और बेहतर	सवाब देने में	बेहतर	वह	अल्लाह के लिए बरहक़

مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	हम ने उस को उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी	मिसाल

فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ

उड़ाती है उसको	चूरा चूरा	वह फिर हो गया	ज़मीन की नबातात (सब्ज़ा)	उस से-ज़रीए	पस मिल जुल गया

الرِّيٰحُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ

माल	45	बड़ी क़ुदरत रखने वाला	हर शै पर	अल्लाह	और है	हवा (जमा)

وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ

बेहतर	नेकियां	और बाक़ी रहने वाली	दुनिया की ज़िन्दगी	ज़ीनत	और बेटे

عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ

पहाड़	हम चलाएंगे	और जिस दिन	46	आर्ज़ू में	और बेहतर	सवाब में	तेरे रब के नज़्दीक

وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾

47	किसी को	उन से	फिर न छोड़ेंगे हम	और हम उन्हें जमा कर लेंगे	खुली हुई (साफ़ मैदान)	ज़मीन	और तू देखेगा

और क्यों न जब तू दाख़िल हुआ अपने बाग़ में, तू ने कहा "माशा अल्लाह" (जो अल्लाह चाहे वही होता है) कोई क़ुव्वत नहीं मगर अल्लाह की (दी हुई) अगर तू मुझे अपने से कम तर देखता है माल में और औलाद में, (39)

तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर दे और उस (तेरे बाग़) पर आफ़त भेजे आस्मान से, फिर वह मिट्टी का चटयल मैदान हो कर रह जाए। (40)

या उस का पानी ख़ुश्क हो जाए, और तू हरगिज़ न कर सके उस को तलाश। (41)

और उस के फल (अ़ज़ाब में) घेर लिए गए और उस में जो उस ने ख़र्च किया था, वह उस पर अपना हाथ मलता रह गया और वह (बाग़) अपनी छतरियों पर गिरा हुआ था और वह कहने लगा ऐ काश, मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता। (42)

और उस के लिए कोई जमाअ़त न हुई कि अल्लाह के सिवा उस की मदद करती, और वह बदला लेने के क़ाबिल न था। (43)

यहां इख़्तियार अल्लाह बरहक़ के लिए है, वही बेहतर है सवाब देने में, और बेहतर है बदला देने में। (44)

और आप (स) उन के लिए बयान करें दुनिया की मिसाल (वह ऐसे है) जैसे हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए ज़मीन का सब्ज़ा मिल जुल गया (खूब घना उगा) फिर वह चूरा चूरा हो गया कि उस को हवाएं उड़ाती हैं, और अल्लाह हर शै पर बड़ी क़ुदरत रखने वाला है। (45)

माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाक़ी रहने वाली नेकियां तेरे रब के नज़्दीक बेहतर हैं सवाब में, और बेहतर हैं आर्ज़ू में। (46)

और जिस दिन हम पहाड़ चलाएंगे, और तू ज़मीन को साफ़ मैदान देखेगा, और हम उन्हें जमा कर लेंगे, फिर हम उन में से किसी को न छोड़ेंगे। (47)

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ

हम ने तुम्हें पैदा किया था	जैसे	अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए	सफ़ बस्ता	तेरा रब	पर - सामने	और वह पेश किए जाएंगे

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ

और रखी जाएगी	48	कोई वक़्ते मौऊद	तुम्हारे लिए	कि हम ठहराएंगे	हरगिज़ न	तुम समझते थे	बल्कि (जबकि)	पहली बार

الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ

उस में	उस से जो	डरते हुए	मुजरिम (जमा)	सो तुम देखोगे	किताब

وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً

छोटी बात	यह नहीं छोड़ती	यह किताब (तहरीर)	कैसी है	हाए हमारी शामते आमाल	और वह कहेंगे

وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ

सामने	जो उन्हों ने किया	और वह पालेंगे	वह उसे घेरे (क़लम बन्द किए) हुए	मगर	बड़ी बात	और न

ع ٦ ٥ ١٨

وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾ ع وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا

तुम सिजदा करो	फ़रिश्तों से	हम ने कहा	और जब	49	किसी पर	तुम्हारा तब	और जुल्म नहीं करेगा

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ

से	वह (बाहर) निकल गया	जिन	से	वह था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिजदा किया	आदम (अ) को

اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ

और वह	मेरे सिवाए	दोस्त (जमा)	और उस की औलाद	सो क्या तुम उस को बनाते हो	अपने रब का हुक्म

لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ

पैदा करना	हाज़िर किया मैं ने उन्हें	नहीं	50	बदल	ज़ालिमों के लिए	बुरा है	दुश्मन	तुम्हारे लिए

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ

बनाने वाला	और मैं नहीं	उन की जानें (खुद वह)	और न पैदा करना	और ज़मीन	आस्मानों

الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

और वह जिन्हें	मेरे शरीक (जमा)	बुलाओ	वह फ़रमाएगा	और जिस दिन	51	बाजू	गुमराह करने वाले

زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	और हम बना देंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	पस वह उन्हें पुकारेंगे	तुम ने गुमान किया

مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا

गिरने वाले हैं उस में	कि वह	तो वह समझ जाएंगे	आग	मुजरिम (जमा)	और देखेंगे	52	हलाकत की जगह

ع ٧ ١٩

وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ ع وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ

कुरआन	इस	में	हम ने फेर फेर कर बयान किया	और अलबत्ता	53	कोई राह	उस से	और न वह पाएंगे

لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

54	झगड़ालू	हर शै से ज़ियादा	इन्सान	और है	हर (तरह की) मिसालें	से	लोगों के लिए

और वह तेरे रब के सामने सफ़ बस्ता पेश किए जाएंगे, (आख़िर) अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जबकि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ कोई वक़्ते मौऊद न ठहराएंगे। (48)
और रखी जाएगी किताब, जो उस में (लिखा होगा) सो तुम मुजरिमों को उस से डरते हुए देखोगे, और वह कहेंगे हाए हमारी शामते आमाल! कैसी है यह तहरीर! यह नहीं छोड़ती छोटी सी बात और न बड़ी बात मगर उसे क़लम बन्द किए हुए है, और वह पा लेंगे जो कुछ उन्हों ने किया (अपने) सामने, और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। (49)
और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम सिजदा करो आदम (अ) को तो (उन) सब ने सिजदा किया सिवाए इब्लीस के, वह (क़ौमे) जिन से था, और वह अपने रब के हुक्म से बाहर निकल गया, सो क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवाए दोस्त बनाते हो? और वह तुम्हारे दुश्मन हैं, बुरा है ज़ालिमों के लिए बदल। (50)
मैं ने उन्हें न आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने (के वक़्त) हाज़िर किया (बुलाया) और न खुद उन के पैदा करते (वक़्त), और मैं गुमराह करने वालों को (दस्त ओ) बाजू बनाने वाला नहीं हूँ। (51)
और जिस दिन वह (अल्लाह) फ़रमाएगा कि बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम ने (माबूद) गुमान किया था, पस वह उन्हें पुकारेंगे तो वह जवाब न देंगे, और हम उन के दरमियान हलाकत की जगह बना देंगे। (52)
और देखेंगे मुजरिम आग, तो वह समझ जाएंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं, और वह उस से (बच निकलने की) कोई राह न पाएंगे। (53)
और हम ने अलबत्ता इस कुरआन में लोगों के लिए फेर फेर कर हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान हर शै से ज़ियादा झगड़ालू है। (54)

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا

और वह बख़्शिश मांगें	हिदायत	जब आ गई उन के पास	वह ईमान लाएं	कि	लोग	रोका	और नहीं

رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ

आए उन के पास	या	पहलों की	रविश (मामला)	उन के पास आए	यह कि	सिवाए	अपना रब

الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ

ख़ुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और हम नहीं भेजते	55	सामने का	अ़ज़ाब

وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا

ताकि वह फ़ुसला दें	नाहक़ (की बातों से)	कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह जिन्हों ने	और झगड़ा करते हैं	और डर सुनाने वाले

بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ

और कौन	56	मज़ाक़	वह डराए गए	और जो-जिस	मेरी आयात	और उन्हों ने बनाया	हक़	उस से

اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ

जो आगे भेजा	और वह भूल गया	उस से	तो उस ने मुँह फेर लिया	उस का रब	आयतों से	समझाया गया	उस से जो	बड़ा ज़ालिम

يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ

और में	वह उसे समझ सकें	कि	पर्दे	उन के दिलों	पर	बेशक हम ने डाल दिए	उस के दोनों हाथ

اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا

पाएं हिदायत	तो वह हरगिज़ न	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ	और अगर	गिरानी	उन के कान

اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا

उस पर जो	उन का मुआख़ज़ा करे	अगर	रहमत वाला	बख़्शने वाला	और तुम्हारा रब	57	कभी भी	जब भी

كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا

वह हरगिज़ न पाएंगे	उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर	बल्कि	अ़ज़ाब	उन के लिए	तो वह जल्द भेज दे	उन्हों ने किया

مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا

और हम ने मुक़र्रर किया	उन्हों ने ज़ुल्म किया	जब	हम ने उन्हें हलाक कर दिया	बस्तियां	और यह (उन)	58	पनाह की जगह	उस से वरे

ع ٨ ٦ ٢٠ لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ ع وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى

यहां तक कि	मैं न हटूँगा	अपने जवान (शागिर्द) से	मूसा (अ)	कहा	और जब	59	एक मुक़र्ररा वक़्त	उन की तबाही के लिए

اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ

मिलने का मुक़ाम	वह दोनों पहुँचे	फिर जब	60	मुद्दते दराज़	या चलता रहूँगा	दो दर्याओं के	मिलने की जगह	मैं पहुँच जाऊँ

بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا

फिर जब	61	सुरंग की तरह	दर्या में	अपना रास्ता	तो उस ने बना लिया	अपनी मछली	वह भूल गए	दोनों के दरमियान

جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَاۗءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

62	तक्लीफ़	इस	अपना सफ़र	से	अलबत्ता हम ने पाई	हमारा सुब्ह का खाना	हमारे पास लाओ	अपने शागिर्द को	उस ने कहा	वह आगे चले

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान ले आएं जब कि उन के पास हिदायत आ गई और वह अपने रब से बख़्शिश मांगें, सिवाए इस के कि उन के पास पहलों की रविश आए या उन के पास आए सामने का अ़ज़ाब। (55)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले, और झगड़ा करते हैं काफ़िर नाहक़ बातों के साथ, ताकि वह उस से हक़ (बात) को फ़ुसला दें, और उन्हों ने बनाया मेरी आयतों को और जिस से वह डराए गए एक मज़ाक़। (56)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से समझाया गया तो उस ने उस से मुँह फेर लिया, और भूल गया जो उस के दोनों हाथों ने (उस ने) आगे भेजा है, बेशक हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह इस क़ुरआन को समझ सकें और उन के कानों में गिरानी है (बहरे हैं) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी वह हरगिज़ हिदायत न पाएंगे कभी भी। (57)

और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर उन के किए पर वह उन का मुआख़ज़ा करे तो वह जल्द भेज दे उन के लिए अ़ज़ाब, बल्कि उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और वह हरगिज़ उस के वरे पनाह की जगह न पाएंगे। (58)

और उन बस्तियों को जब उन्हों ने ज़ुल्म किया हम ने हलाक कर दिया, और हम ने उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया। (59)

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने शागिर्द से कहा मैं हटूँगा नहीं (चलता रहूँगा) यहां तक कि पहुँच जाऊँ दो (2) दर्याओं के मिलने की जगह (संगम पर) या मैं मुद्दते दराज़ चलता रहूँगा। (60)

फिर जब वह दोनों (दर्याओं) के संगम पर पहुँचे तो वह अपनी मछली भूल गए तो उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया दर्या में सुरंग की तरह। (61)

फिर जब वह आगे चले तो मूसा (अ) ने अपने शागिर्द को कहा हमारे लिए सुब्ह का खाना लाओ, अलबत्ता हम ने अपने इस सफ़र से बहुत (तक्लीफ़) थकान पाई है। (62)

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ

मछली	भूल गया	तो बेशक मैं	पत्थर	तरफ़-पास	हम ठहरे	जब	क्या आप ने देखा?	उस ने कहा

وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ

दर्या में	अपना रास्ता	और उस ने बना लिया	मैं उस का ज़िक्र करूँ	कि	शैतान	मगर	भुलाया मुझे	और नहीं

عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا

अपने निशानाते (क़दम)	पर	फिर वह दोनों लौटे	हम चाहते थे	जो	यह	उस ने कहा	63	अजीब तरह

قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا

अपने पास	से	रहमत	हम ने दी उसे	हमारे बन्दे	से	एक बन्दा	फिर दोनों ने पाया	64	देखते हुए

وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى

पर	मैं तुम्हारे साथ चलूँ	क्या	मूसा (अ)	उस को	कहा	65	इल्म	अपने पास से	और हम ने इल्म दिया उसे

اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ

हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	उस ने कहा	66	भली राह	तुम्हें सिखाया गया है	उस से जो	तुम सिखा दो मुझे	कि

مَعِىَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

68	वाक़फ़ियत से	तू ने अहाता नहीं किया उसका	जो	उस पर	तू सब्र करेगा	और कैसे	67	सब्र	मेरे साथ

قَالَ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

69	किसी बात	तुम्हारे	मैं नाफ़रमानी करूँगा	और न	सब्र करने वाला	अगर चाहा अल्लाह ने	तुम मुझे पाओगे जल्द	उस ने कहा

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ

मैं बयान करूँ	यहां तक कि	किसी चीज़	से - के बारे में	तो मुझ से न पूछना	तुझे मेरे साथ चलना है	पस अगर	उस ने कहा

ع ٩ ١١ ٢١

لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ ع فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۭ

उस ने सुराख़ कर दिया उस में	कश्ती में	वह दोनों सवार हुए	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	70	ज़िक्र	उस का	तुझ से

قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾

71	भारी	एक बात	अलबत्ता तू लाया (तू ने की)	उस के सवार	कि तुम ग़र्क़ कर दो	तुम ने उस में सुराख़ कर दिया	उस ने कहा

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ

उस ने कहा	72	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	क्या मैं ने नहीं कहा	(ख़िज़्र अ) ने कहा

لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾

73	मुश्किल	मेरा मामला	से	और मुझ पर न डालें	मैं भूल गया	उस पर जो	आप मेरा मुआख़ज़ा न करें

فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ

क्या तुम ने क़त्ल कर दिया	उस ने कहा	तो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	एक लड़का	वह मिले	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले

نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

74	नापसन्दीदा	एक काम	तुम आए (तुम ने किया)	अलबत्ता	जान	बग़ैर	पाक	एक जान

उस ने कहा क्या आप ने देखा? जब हम पत्थर के पास ठहरे तो बेशक मैं मछली भूल गया और मुझे नहीं भुलाया मगर शैतान ने, कि मैं (आप से) उस का ज़िक्र करूँ, और उस ने बना लिया अपना रास्ता दर्या में अजीब तरह से। (63)

मूसा (अ) ने कहा यही है (वह मुक़ाम) जो हम चाहते थे, फिर वह दोनों लौटे अपने निशानाते क़दम पर देखते हुए। (64)

फिर उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा (ख़िज़्र अ) को पाया, उसे हम ने अपने पास से रहमत दी, और हम ने उसे अपने पास से इल्म दिया। (65)

मूसा (अ) ने उस से कहा क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ? इस (बात) पर कि तुम मुझे सिखा दो इस भली राह में से जो तुम्हें सिखाई गई है। (66)

उस (ख़िज़्र अ) ने कहा बेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। (67)

और तू उस पर कैसे सब्र कर सकेगा जिस का तू ने वाक़िफ़ियत से अहाता नहीं किया (जिस से तू वाक़िफ़ नहीं)। (68)

मूसा (अ) ने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जल्द मुझे पाओगे सब्र करने वाला, और मैं तुम्हारी किसी बात की नाफ़रमानी न करूँगा। (69)

ख़िज़्र (अ) ने कहा पस अगर तुझे मेरे साथ चलना है तो मुझ से न पूछना किसी चीज़ से मुतअ़ल्लिक़, यहां तक कि मैं ख़ुद तुझ से ज़िक्र करूँ। (70)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि जब वह दोनों कश्ती में सवार हुए, उस (ख़िज़्र अ) ने उस में सुराख़ कर दिया, मूसा (अ) ने कहा तुम ने उस में सुराख़ कर दिया ताकि तुम उस के सवारों को ग़र्क़ कर दो, अलबत्ता तुम ने एक भारी (ख़तरे की) बात की है। (71)

ख़िज़्र (अ) ने कहा क्या मैं ने नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। (72)

मूसा (अ) ने कहा आप उस पर मेरा मुआख़ज़ा न करें जो मैं भूल गया और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालें। (73)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि वह एक लड़के को मिले तो उस (ख़िज़्र अ) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अ) ने कहा क्या तुम ने एक पाक जान को जान (के बदले के) बग़ैर क़त्ल कर दिया, अलबत्ता तुम ने एक नापसन्दीदा काम किया। (74)